ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

اربعین نمبر
(مارچ ۲۰۱۰ء)

موسسۂ نور ہدایت، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk, Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

(Arbaeen Number) March 2010

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष-6

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक-8

मार्च - 2010

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद

प्रोफ़ेसर अल्लामा सै० अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफ़ेसर सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
प्रोफ़ेसर सै० इमरान हैदर, मु० र० आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़हीब नगरौरी

वार्षिक - 200 रु मिलने का पता क़ीमत - 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत। फोन न० 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

मजलिसे इदारत

- डॉ० अमानत हुसैन
- सै० सुफ़यान अहमद नदवी
- तज़हीब नगरौरी
- डॉ० आरिफ़ अब्बास
- मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

WEBSITE:
www.noorehidayat.com
www.al-ijtihaad.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर

2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर

3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर

4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

...अरबईन नम्बर 1431 हि०....

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

(फ़रवरी-मार्च 2010 ई० सफ़र-रबीउलअव्वल-1431 हि०)

न० मज़मून व लेखक	पेज
1— मजलिसे शामे ग़रीबाँ आयतुल्लाह सै० कल्बे हुसैन नक़वी ता०स०	3
2— हुसैन—हुसैनः एक परिचय सैय्यिदुल उलमा सै० अली नक़वी नक़वी ता०स०	8
3— इस्लाम पोथी अल्लामा नज्म आफ़न्दी	10
4— आज़ाद भारत से करबला की याद की माँग सैय्यिदुल उलमा सै० अली नक़वी नक़वी ता०स०	15
5- मुख्य समाचार इदारा	19

FORM-IV
(See Rule No-8)

1. Place of Publication:	Noorehidayat Foundation Imambara Ghufranmaab, Maulana Kalbe Husain Road, Chowk, Lucknow
2. Periodicity:	Monthly
3. Printer's Name:	Syed Kalbe Jawad Naqvi
Whether citizen of India:	Yes
Address:	39, Jauhari Mohalla, Chowk, Lucknow
4. Publisher's Name:	Syed Kalbe Jawad Naqvi
Whether citizen of India:	Yes
Address:	39, Jauhari Mohalla, Chowk, Lucknow
5. Editor's Name:	Syed Mustafa Husain Naqvi
Whether citizen of India:	Yes
Local Address:	Imambara Ghufranmaab, Maulana Kalbe Husain Road, Chowk, Lucknow
Permanent Address:	Mohalla Syedana, Qasba Jais, Distt. Raibareli (U.P.)
6. Owner's Name:	Syed Kalbe Jawad Naqvi
Whether citizen of India:	Yes
Address:	39, Jauhari Mohalla, Chowk, Lucknow

I Syed Kalbe Jawad Naqvi, hereby declare that the particulars given are true and correct to the best of my knowledge and belief.

Lucknow — Syed Kalbe Jawad Naqvi

Date: 28-02-2010 — Printer and Publisher

मजलिस शामे ग़रीबाँ

ज़ाकिरे शामे ग़रीबाँ उमदतुल उलमा आयतुल्लाह सै० कल्बे हुसैन साहब क़िब्ला ताबा सराह

जाहिल और बदबातिन इन्सानों का ख़याल है कि इमाम हुसैन[अ०] करबला में मुल्क लेने और सलतनत हासिल करने की ग़रज़ से तशरीफ़ लाये थे जेहाद करके फ़तह हासिल करना आपकी तमन्ना थी। लेकिन यह ग़लत और महेज़ बेबुनियाद इल्ज़ाम है। अगर आपकी नज़र अपने उस मज़लूम इमाम की पूरी सवानेह उमरी और तमाम हालाते ज़िन्दगी पर हो तो आप मेरी तसदीक़ करेंगे कि इमाम हुसैन[अ०] की नियत जेहाद की होती और आपके जेहाद की ग़रज़ फ़तह होती तो हमारा इमाम इतना बेअसर न था कि वह लश्कर जमा न कर सकता था। दो चार हज़ार आदमी मदीने से दस बीस हज़ार आदमी एय्यामे हज में मक्का से यमन से बसरा से मुख़्तलिफ़ क़बाएले अरब से तीस चालीस हज़ार का लश्कर जमा कर लेना इमाम हुसैन[अ०] के वास्ते बड़ी बात न थी। हज़रत के तलब के बग़ैर सिर्फ़ रास्ते ही में हज़ार आदमी से ज़ायद आपके हमराह हो गये थे तो अगर लश्कर जमा करने की कोशिश करते तो कितने आपके साथ होते मगर हज़रत की ये ग़रज़ थी ही नहीं। न मदीने में लश्कर जमा किया, न मक्का में एलाने जेहाद किया, न शहरों-शहरों से लोगों को बुलाने की कोशिश की बल्कि बरख़िलाफ़ इसके जो लोग इधर-उधर जमा हो गये थे उनको भी अपनी ग़रज़ बता-बता के अपनी शहादत की ख़बर सुना-सुना के अलग करना शुरु किया और सिर्फ़ उनही लोगों को साथ रखने की कोशिश की बल्कि ख़त लिखकर बुलाया जिनसे बहत्तर शहीदों की तादाद पूरी होती है जो अपने ईमान में कामिल हों कि शहादत की ख़बर सुन कर दीन न छोड़ें, बल्कि और सिबाते क़दम में इज़ाफ़ा हो जाए। कुछ लोग मक्का से चुने मगर वही जो बूढ़े भी हों तो हाथ न काँपें। कुछ लोग रास्ते से लिये मगर ऐसे जो शहादत की ख़ुशख़बरी से झूमने लगें। हाँ औरतें भी साथ लीं मगर वही जो वक़्ते आख़िर अपने अपने दिल के टुकड़ों का सर ज़ानू पर लें मगर चेहरे से ख़ून पोंछें और कहें ऐ नूरे नज़र! तुम ने हमको फ़ातिमा ज़हरा[स०] से सुरख़ुरू कर दिया, रोएं तो मगर बेसब्र न हों सीना ज़नी करें मगर बददुआ न करें, असीर हो जाएं मगर हक़ का एलान करती रहें, हाथों में रस्सियाँ तो बंधें मगर तबलीग़े ईमान से ज़बान न रुके, क़ैदख़ाने में हों मगर इस्लाम को आज़ाद करती रहें। देख चुके थे हुसैन[अ०] कि नाना ने जेहाद किया मगर मुनाफ़िक़ों की शिद्दत न रुकी। अली[अ०] दुश्मनाने इस्लाम से लड़े मगर मुनाफ़िक़ों ने एतेराज़ कर ही दिया कि अली[अ०] सलतनत लेने के वास्ते लड़े। अब ऐ हुसैन[अ०]! तुम ने अन्दाज़े जेहाद यूँ बदल दिया कि अगर कोई बदबातिन कह भी दे कि हुसैन[अ०] सलतनत के वास्ते लड़े तो मुसलमान नहीं, काफिर दोस्त नहीं, दुश्मन मुवाफ़िक़ नहीं, मुख़ालिफ़ भी ज़बान पकड़ लेंगे कि हरगिज़ नहीं हुसैन[अ०] सलतनत के वास्ते नहीं लड़े। दीन के वास्ते लड़े, ईमान के वास्ते लड़े। ख़ुदा के वास्ते लड़े बल्कि इन्सानियत की हिमायत के वास्ते लड़े। अफसोस वक़्त तंग है मेरी कुव्वत ख़त्म है। आवाज़ साथ छोड़ चुकी है जो कहना चाहता हूँ वह एक समन्दर है। क्योंकर कूज़े में बन्द करूँ। क्योंकर समन्दर को नुक़ता और दरिया को क़तरा बनाके सामईन तक पहुँचाऊँ। मेरा दावा है कि इन्सानियत और इस्लाम दो लफ़्ज़ें बज़ाहिर अलग हैं। मगर दरहक़ीक़त एक हैं। तालीमे इन्सानियत और तबलीग़े इस्लाम दो जुमले अलग हैं मगर माने एक हैं। अहकामे मज़हब और हुस्ने अख़लाक़ दो इबारतें जुदा-जुदा हैं। मगर मतलब एक ही है मोमिन कामिल और किरदार की बुलन्दियाँ बज़ाहिर जुदा हैं मगर दरअस्ल हैं एक ही।

इन्सान और हैवान आदमी और जानवर हैं,

सूरत का फ़र्क़ कोई फ़र्क़ नहीं। नाक नक़्शे का बल कोई बल नहीं। क्या हज़ारों क़िस्म के जानवरों में हर जानवर की सूरत अलग नहीं? मगर इस सूरत के फ़र्क़ ने किसी एक जानवर को भी हैवानियत से जुदा नहीं किया। बड़े से बड़े फ़र्क के बाद भी सब जानवर ही रहे। तो इन्सान की सूरत के फ़र्क़ ने इन्सान को हैवान से जुदा नहीं किया। ख़्वाहिशात व जज़्बात और एहसासात के फ़र्क ने भी इन्सान को जानवर से अलग नहीं किया। खाना पीना जिस तरह इन्सान में है, उसी तरह जानवर में। मुहब्बत व अदावत जिस तरह इन्सान में है, उसी तरह जानवर में भी। तवालुद व तनासुल (Reproduction) जिस तरह इन्सान में है, उसी तरह जानवर में। मगर अक़्ल और सिर्फ़ अक़्ल है जो इन्सान में है और जानवर में नहीं।

यह तो नामुमकिन है कि इन्सान अपनी ऐसी ख़्वाहिश से काम न ले जो जानवरों में भी मौजूद है। कौन है जो खाना पीना, सोना जागना, तवालुद व तनासुल, ग़ैज़ व ग़ज़ब, मुहब्बत व अदावत से दस्तबरदार हो जाए? नामुमकिन और बिलकुल नामुमकिन है।

इन तमाम कुव्वतों से इन्सान काम लेगा और ज़रूर काम लेगा। तो फिर इन्सान और हैवान में क्या फ़र्क रहेगा? मैं आपसे अर्ज़ करूँ कि फ़र्क़ बहुत नाज़ुक है और सिर्फ़ ये कि जब हैवान इन्हीं कुव्वतों से काम लेगा, तो इनका बन्दा बन के काम न बनेगा। और इन्सान जब इन कुव्वतों से काम लेगा तो इनका बन्दा बन कर काम न लेगा। जब फ़र्क निकल आया तो आपको मानना पड़ेगा कि जिस इन्सान ने अक़ल होने के बाद अक़ल से काम न लिया। और जज़्बात व ख़्वाहिशात का बन्दा बन गया, वह जानवर से भी बदतर है और जो इन्सान अपने किसी जज़्बे और ख़्वाहिश से बन्दा न था बल्कि सिर्फ़ अक़ल का बन्दा रहा। और तमाम ख़्वाहिशात को अक़ल की ग़ुलामी में दे दिया, वह ऐन इन्सान है। और इस्लाम यही सिखाता है कि अपनी हर ख़्वाहिश को अक़ल की ग़ुलामी में क्योंकर दिया जाए। लेहाज़ा तालीमे इस्लाम और तालीमे इन्सानियत बिल्कुल एक ही चीज़ हो गई। तो जिस हुसैन[अ०] ने इस्लाम को बचाया, उसने इन्सानियत को बचाया। जिस हुसैन[अ०] ने बेदीनी को मिटाया उसने हैवानियत को मिटाया, ज़ुल्म व जौर को मिटाया। आप याद रखिये कि अगर इमाम हुसैन[अ०] करबला में तन्हा होते तो कहने में बात आती कि करोड़ों इन्सानों में सिर्फ़ एक का इस मंज़िल पर पहुँच जाना ख़ुद ही इसकी दलील है कि हर इंसान इसकी दलील नहीं बन सकता। इसलिए मज़लूम इमाम ने अपनी राहे अमल में सौ डेढ़ सौ इन्सानों को शरीक कर लिया कि अब तो मेरा नक़्शेक़दम बेनज़ीर नहीं, मेरी उम्र सत्तावन अटठावन साल है, देख (लो) कि मुझ से ज़ायद सिनरसीदा इन्सान मेरे नक़्शेक़दम पर चल रहे हैं या नहीं। मुमकिन है कि तुम इस जज़्बए फ़िदाकारी को बनी हाशिम की मख़सूस सनअत क़रार दो। तो देख लो। मेरे साथ हर क़ौम व क़बीले का इन्सान है या नहीं। अगर कमसिन बच्चे जवानों के नक़्शेक़दम पर क़दम रखने को तैयार न हों। तो देख लो मेरे साथ बच्चे हैं या नहीं, अगर सिन्फ़े नाज़ुक मर्दों के अन्दाज़ अपने वास्ते नामुमकिन समझे तो देख लो कि मेरे साथ औरतें हैं या नहीं। मेरी तरह शाहराहे इमामत पर तुम नहीं चल सकते, तो मुस्लिम बिन औसजा को देखो, हबीब इब्ने मज़ाहिर को देखो, मेरे अब्बास[अ०] पर नज़र करो। अली अकबर से सबक़ लो। उनसे भी ज़ायद कमसिन हो तो मेरे क़ासिम को देखो। तलवार उठाने के इतनी भी कुदरत नहीं तो मेरे भाई की यादगार अब्दुल्लाह बिन हसन की तरह तलवार के नीचे हाथ तो फैला दो। अगर ये भी न हो सके तो असग़र की तरह मुसकुरा के तीर के सामने गला तो पेश कर दो। औरतें तलवार नहीं उठा सकतीं तो हाथों में रस्सियाँ तो हो सकती हैं, क़ैद की तारीक रातें तो सब्र से गुज़ार सकती हैं। अगर कोई कहे कि हम तो नौ मुस्लिम हैं, नस्ल दर नस्ल के ख़ुदा परस्तों की कुव्वत व सिबात कहाँ से लाएं तो मेरे हुर को देखो दो ही क़दम में सीरत बदल गयी। आदत बदल गयी, जहन्नम से जन्नत बदल गयी। हैवानियत से इन्सानियत बदल गयी। अली[अ०] की तरह शहीद होना हुसैन[अ०] से भी मुमकिन था। हसन[अ०] की तरह ज़हर पी लेना हुसैन के वास्ते आसान था मगर कहने में बात आती है कि इल्म व यक़ीन शहादत के बाद हुक्मे ख़ुदा

की इताअत में तलवार के नीचे सर झुका देना ज़हर का प्याला पी लेना इमाम ही का काम है, हमारे इम्कान में नहीं। लेहाज़ा हुसैन[अ०] ने डेढ़ सौ ऐसे मर्दों और औरतों को नमून-ए-अमल बना दिया। जिनमें से कोई एक भी इमाम न था। ये सब के सब कुल के कुल इन्सानियत की तालीम देने के वास्ते हैवानियत के मुक़ाबले में सीना तान के खड़े हुए, ज़ुल्म के मुक़ाबले में मज़लूमियत की मुकम्मल तस्वीर बन गये। दुनिया परस्ती के मुक़ाबले में दीनदारी के जलवे पेश करने को आइन-ए-जमाल बन गये। यज़ीद उधर था, हुसैन[अ०] इधर थे। शैतान उधर था, खुदा इधर था। कुफ़्र उधर था, इस्लाम इधर था। बेदीनी वहाँ थी, ईमान यहाँ था। ज़ुल्म व जौर उधर था, अद्ल व इन्साफ़ इधर था। नफ़्स परस्ती उधर थी, हक़ परस्ती इधर थी। कसरत उस तरफ़ थी, क़िल्लत इस तरफ थी। फ़तह पर नाज़ वहाँ था, शहादत पर मसर्रत यहाँ थी। हैवानियत की मुकम्मल तस्वीर वह थे, इन्सानियत का मुकम्मल नमूना ये थे। इसी इन्सानियत व हैवानियत का फ़र्क़ था कि यज़ीद वालों का हर फेल क़ाबिले मज़म्मत था और हुसैन[अ०] वालों का हर अमल क़ाबिले मदह था। मैं अर्ज़ कर चुका कि ख़्वाहिशात नफ़्सानी को अक़्ल पर ग़ालिब कर देना हैवानियत है और तमाम ख़्वाहिशात को अक़्ल पर ग़ालिब रखना ऐन इन्सानियत है। इसी कुल्लिया के दो ज़बरदस्त आइने कर्बला के मैदान में मुक़ाबले पर थे। प्यास में हर अच्छा और बुरा पानी पी लेना ऐन हैवानियत है और अपना पानी हुर के लश्कर को पिला देना ऐन इन्सानियत है। दूसरों पर पानी बन्द करके नहर की बहती मौजों से सैर होना हैवानियत है और क़ुदरत होने के बाद भी प्यास से ज़बान चबाना ऐन इन्सानियत थी। बड़े से बड़े ज़बरदस्त शेर को भी तीन चार दिन पानी न दीजिये तो वह आपके सामने सरे इताअत झुका देगा। यह है हैवानियत, मगर तीन दिन की प्यास बर्दाश्त करके तेवर पर बल न आना, यह है इन्सानियत। न मानिये कि पानी इमाम के क़ब्ज़े में था, जब चाहते ज़ोरे इमामत से निकाल लेते। तो हुसैन[अ०] के क़ब्ज़े में यज़ीद की बैअत व इताअत तो थी, मगर वह जानवर है जो भूख प्यास से बेचैन होकर सरे नियाज़ झुका देता है, मगर ये थी ऐन इन्सानियत, तीन दिन की भूख और प्यास में ज़ोर ईमान वही रहा और हैवानियत के सामने सर न झुकाया।

क्या हुसैनी लश्कर वालों ने यज़ीद वालों को ज़ख़्मी नहीं किया। क़त्ल नहीं किया? जी हाँ इधर तो बहत्तर ही क़त्ल हुए और उधर हज़ारों मरे। मगर इसके बाद ये मज़लूम, वह ज़ालिम। वह जहन्नम में, ये जन्नत में। वह क़ाबिले मज़म्मत, यह लायक़े मदह। इनके मुर्दे हंस देने के क़ाबिल, उनकी लाशें रो देने के लायक़। ये फ़र्क़ क्यों? सिर्फ़ इसलिए कि किसी बे ख़ता इन्सान का क़त्ल जुर्म है और किसी मूज़ी जानवर का क़त्ल जुर्म नहीं। इधर जितने शहीद हुए वह इन्सान थे और उधर जितने क़त्ल हुए वह सूरत में जानवर थे और वह भी अज़ियत देने वाले। वह ज़ुल्म की हिमायत में मरे, ये मज़लूम कि हिमायत में शहीद हुए। उनका क़त्ल होना ऐन बेअक़्ली था, इनका शहीद होना ऐन अक़्ल, ऐन ईमान था। खुदा की राह में फ़िदाकारी था, सरफ़रोशी था और इस सरफ़रोशी में जवानों के एक पहलू में बुढढे भी थे और दूसरे पहले में बच्चे थे और पसेपुश्त औरतें थीं, तपती हुई ज़मीन थी, लरज़ती हुई फ़िज़ा थी। ख़ाक बरसरे फ़लक था, सोज़िशे ग़म में जलता हुआ आफ़ताब था, अंगुश्तबदन्दाँ मलक थे। खुदा को अपनी क़ुदरत पर नाज़, बहत्तर को अपने इमाम पर नाज़। दुश्मन को हैवानियत पर नाज़ और हुसैन[अ०] को इन्सानियत पर नाज़। वह तैयार कि आज ज़ुल्म की कोई हद उठ न रहे और हुसैन[अ०] तैयार कि सब्र की कोई मंज़िल झूट न जाय। सुब्हे आशूर ताले हुई। नमाज़ के मुसल्ले बिछ के उठे। बहादरों ने दरगाहे बारी में नमाज़ के वास्ते हाथ उठाये। शहादत की तमन्ना, सब्र की तमन्ना, सिबाते क़दम की आरज़ू ईमान पर बाक़ी रहने की दुआएं करके जो हाथ हटे तो तलवारों के क़ब्ज़ों की तरफ। बुढढों ने तीरों पर सहारा किया। बच्चे तीरों से खेलने लगे। ख़ून बहा तो हिम्मत बढ़ी। ज़ख़्म खाए तो मुस्कुरा दिये। सर कटे तो सुबुक बार हुए। लाशें गिरीं, तो आराम आया। साथी न रहे तो अज़ीज़ बढ़े, चचा की औलाद, भाई के बच्चे, अब्बास के भाई। सब ही ने इम्तिहाने वफ़ा दिया।

आख़िर अलमदारे हुसैन[अ०] बढ़ा। पाँच हज़ार पर हमला किया। सफ़ें तोड़कर फ़ुरात पर क़ब्ज़ा किया। मश्क भरी, पानी न पिया। हाथ कटे तो अलम गिरा। गुर्ज़ पड़ा तो संभल न सके। आख़िर भाई को आवाज़ दी। हुसैन[अ०] ने सर ज़ानू पर लिया। भाई ने भाई को रुख़सत किया। ज़ख़्मों की इतनी कसरत कि लाश भी हुसैन उठा न सके। अब नूरेनिगाह की बारी थी। अटठारह बरस का सिन, भरपूर जवानी, माँ की तमन्ना, फूफी की गोद का पला, बाप के दिल का टुकड़ा। बेहद हसीन व बेइन्तेहा ख़ूबसूरत, शबीहे रसूल दस्ते अदब बाँधकर आगे बढ़ा। बेटे को हुसैन[अ०] ने निगाहे हस्रत से देखा, दिल तड़पा मगर संभले, गले से लगाकर प्यार किया, मरने की इजाज़त दी। जवान फ़रज़न्द घोड़ा बढ़ाके चला और ज़ईफ़ बाप दिल संभाले पीछे-पीछे चला। अली अकबर ने मुड़कर देखाः ''बाबा आप क्यों ज़हमत कर रहे हैं?'' इमाम ने जवाब दियाः ''पार-ए-जिगर मैं रोकता नहीं। जाओ जाओ ख़ुदा तुमको शहादत मुबारक करे। मगर नूरे नज़र जब तक मुमकिन हो मुँह फेर-फेर कर देखते रहो कि मैं आख़िरी ज़ियारत करता रहूँ''।

ये सब्र की आख़िरी मंज़िल थी कि जवान बेटे ने आवाज़ दीः ''बाबा आख़िरी सलाम लीजिये।'' और बाप तड़प के मैय्यत पर आया, झुक के बच्चे का मुँह चूमा। काँपते हाथों से लाश उठायी। जब ये मंज़िल भी तमाम हुई, तो ख़ेमें में आके असग़र को लिया। छः महीने का बच्चा गोद में और हुसैन[अ०] के दिल की तमन्ना कि आख़िरी हदिया भी बारगाहे ख़ुदा में पेश करूँ।

दुनिया हैरान है कि इस बच्चे को मक़तल में क्यों लाए मगर इसलिए लाए कि दुश्मन के ज़ुल्म की इन्तेहा खुले। इसलिए लाए कि हर साहेबे औलाद तड़प उठे। इसलिए लाए कि तमाम दुनिया देख ले कि हुसैन[अ०] की मजबूरियाँ किस हद पर थीं। जो लड़किया हुसैन[अ०] के साथ थीं, उनमें कोई तीन बरस से कमसिन न थी जो बच्चे ख़ेमों में बच गए वह तीन बरस से ज़ायद भी न थे। इतने बच्चे थोड़ी ही देर सही मगर पैदल चल तो सकते हैं, महमल कजावे में बैठ तो सकते हैं। मगर छः माह का बच्चा गोद के बग़ैर क्योंकर रहे। हुसैन[अ०] तो जानते थे कि मेरे बाद औरतों के हाथ बंधेंगे। कौन होगा जो अली असग़र को गोद में लेगा? इसलिए आग़ोशे लहद में लिटाया कि मेरी जान इसी गहवारे में आराम करे। हदिया मुख़्तसर था मगर पेश करने का अन्दाज़ सख़्त था। बच्चे को संभालना आसान था मगर दिल संभालना मुश्किल था। मगर वाह रे हुसैनअ०! वाह!! दुनिया काँपी मगर आपका हाथ न काँपा, ज़मीन लरज़ी मगर इस मज़लूम के क़दम न लरज़े। तीर के मुक़ाबले से न बच्चे ने मुँह फेरा, न हुसैन[अ०] ने। बच्चे ने मुस्कुरा के तीर खाया और बड़े इत्मिनान से हुसैन[अ०] ने असग़र के गले से तीर निकाला। बच्चे ने मुस्कुरा के बाप को देखा, गोया मतलब ये था कि बाबा ख़ुदा का शुक्र है कि मैं आपकी तरह सब्र की राहों से गुज़र गया। हुसैन[अ०] ने बच्चे का ख़ून चेहरे पर मला कि मेरी शहादत का ग़ाज़ा-ए-हसीन इस बच्चे का ख़ून है जिसने मुझको मेरे अल्लाह के सामने सुरख़ुरु किया। अब तमाम नज़रें गुज़र चुकीं थीं। बस हुसैन[अ०] बाक़ी थे। या एक बीमार था, कुछ छोटी-छोटी बच्चियाँ थीं। या वह मजबूर बेकस सैयदानियाँ थीं। रुख़सते आख़िर को इमाम ख़ेमे में आए, मगर सीने से असग़र की मैयत लिपटाये हुए-

ले चले सीने से लिपटाकर हुसैन[अ०] असग़र की लाश
और प्यारा हो गया ये फूल मुरझाने के बाद

बेकस माँ ने बच्चे का आख़िरी दीदार देखा। बहते हुए आँसू रोके, ख़ेमे का पर्दा पकड़कर दिल संभाला कहा तो बस इतना कहा कि हाए मेरा बच्चा। इस उम्र के तो बच्चे भी ज़बह नहीं किये जाते जिस सिन में तुझको ज़बह कर दिया गया। हमारे मज़लूम व बेकस इमाम ने मरने की तैयारी शुरु कर दी। फटे पुराने कपड़े बहन से माँग के पहने कि कोई जिस्म से उतार न ले जाए हसरत की निगाह से एक-एक को देखा। सब्र व सुकून की वसिय्यत की। अपनी तीन बरस की बच्ची सकीना को गोद में लिया, प्यार किया, बहन की आग़ोशे मुहब्बत में दिया, ''मेरी बहन इस बच्ची का ख़याल सबसे ज़्यादा करना। तसल्ली देना, दिलासा देना, अगर पानी मिल जाए तो सबसे पहले मेरी बच्ची को देना।'' ख़ेमे का पर्दा उठा। बहन ने रिकाब पकड़कर भाई को

घोड़े पर सवार किया और राहे ख़ुदा का मुसाफ़िर मुस्कुराता हुआ मैदाने जंग में आया। तीर बढ़े कि सीने को बोसा दें। नेज़े झुके कि सलाम करें। तलवारें खिचीं कि इस्तेक़बाल करें। और मज़लूम इमाम ने बन्दे क़बा खोले कि आरज़ू न रहे। दो चार दस बीस नहीं एक हज़ार नौ सौ इक्कावन ज़ख़्म खाये और हुसैन[अ०] ज़मीन की तरह झुके, ज़मीन लरज़ी, आसमान काँपा, आँधियाँ उठीं, तारीकी फैली। मेरा दिल कहता है कि बिस्मिल्लाह कह के नाना बढ़े। बाप ने हुसैन[अ०] का बाज़ू संभाला। माँ गोदी फैला के बैठी कि मेरे बच्चे आ मैं अपने काँपते ज़ानू पर सर रख लूँ। सर कटे तो मेरी गोद में कटे बहन घबरा के ख़ेमे से निकली मेरे बेकस भाई मैं अबा का साया तो कर लूँ। अगर मिल जाए तो पानी पिला दूँ। और फलक से आयत उतरीः ''या ऐय्यतुहन्नफ़्सुल मुत्मइन्नह् इरजिई'' ऐ नफ़्से मुतमइन्ना ऐ जाने सब्रो सुकून, ऐ मेरे हुसैन[अ०]! इत्मिनान की मंज़िलों से गुज़र के सब्र की राहों से बुलन्द होकर मेरे तक़र्रुब की मंज़िल मे। वापस आ। फ़तह वह फ़ीरोज़ी का ताज तेरे लिए मेरी जन्नत तेरे लिए। सारी दुनिया तेरी फ़िदाई, दिलों पर क़ब्ज़ा तेरा। बस मेरे हुसैन[अ०] बस, मुसीबत की दुनिया ख़त्म हुई। अब ज़ुल्म व जौर की तमाम कोशिशें तेरे कारनामों को अपने सियाह दामन में ढांक नहीं सकतीं। मैं तुझ से राज़ी और तू मुझसे राज़ी। बल्कि तमाम दुनिया तुझ से राज़ी। हाँ यक़ीनन इस मज़लूम इमाम ने वह काम किया कि ख़ुदा राज़ी, रसूल राज़ी, अली[अ०] व फ़ातिमा[अ०] राज़ी। यही नहीं बल्कि हुसैन[अ०] का अन्दाज़े शहादत वह था कि हर मोमिन व मुस्लिम राज़ी। हर दीन व मज़हब मद्दाह। हर ज़बान पे हुसैन[अ०] का नाम, हुसैन[अ०] की सीरत। हुसैन[अ०] का ईसार, हुसैन[अ०] का इत्तेहाद। हुसैन[अ०] की सियासत, हुसैन[अ०] की शुजाअत। हुसैन[अ०] की सरफ़रोशी ''वल्लाह कि ऐ हुसैन[अ०] कारे करदी'' ज़बाने हाल मेरा दिल और हर इंसाफ़ पसन्द का अक़ीदा कह रहा है कि जब आदम ने हुसैन[अ०] पर निगाह की होगी, गले लगाया होगा कि हुसैन[अ०] तुम ने मेरी नस्ल को मलक से बेहतर कर दिया। नूह[अ०] ख़ुश कि तुमने इस्लाम की कश्ती पार लगाई, इब्राहीम राज़ी कि मेरी ख़ुल्लत निभा गये, इस्माईल ममनूने एहसान कि ज़बीहे फ़ुरात तुमने शहादत का बार उठाके मुझे छुरी के नीचे से हटा लिया। जनाबे मूसा[अ०] मदहसरा कि तुमने ज़ुल्म का बेड़ा डुबो के छोड़ा। जनाब ईसा[अ०] मद्दाह कि हुसैन[अ०] तुमने मेरी जाँफ़िशानी परवान चढ़ा दी। हाशिम नाज़ाँ कि मेरे ख़ानदान को चारचाँद लगा दिये। ख़ुद मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] गले से लगाए हुए कि तुम ने मेरा दीन ज़िन्दा कर दिया। अली सीने से लगाए हुए कि नूरे नज़र अदयान की राहें रौशन कर दीं। हसन[अ०] सा भाई ताजे इमामत पहनाते हुए मेरे क़ुव्वते बाज़ू तूने मेरी सुलह का नतीजा ज़ाहिर किया। और माँ जलती ज़मीन पर गोद फैलाए हुए कि आ मेरे बच्चे आ मैंने तुझको इसी दिन के वास्ते पाला था। ये तो नाना थे, बाबा थे, अम्बिया थे, मुरसलीन थे, भाई थे, माँ थी। मगर दुनिया का वह कौन इंसान है कि हुसैन[अ०] की मदहो सना न कर रहा हो। सूफ़ियों का क़ौल है कि-

हक़्क़ा कि बिनाए ला इलाह अस्त हुसैन[अ०]

बहादरों का दिल क़वी कि हुसैन[अ०] सरदार बन जाएं तो शुजाअत के जौहर खुलें। फ़क़ीरों को तसल्ली कि हमारा फ़ाक़ा तो कोई चीज़ नहीं। दौलतमन्दों को दहशत कि हुसैन[अ०] ने सरमायेदारी को रौंद डाला। बादशाहों की निगाह दरबारे हुसैनी पर कि शाहज़ादा हो तो ऐसा हो। मसावात के बंदे सरे नियाज़ झुकाए हुए कि ग़ुलाम और आक़ा को बराबर करके दिखाया। सियासत वाले इस में मह्व कि यज़ीद की सलतनत क्योंकर मिटाई। उसूल के पाबन्द अंगुश्त बदन्दाँ कि हक़ को उभारे तो यूँ उभारे मगर बेटी की ज़बान पे दर्द व नौहा ''मातल फ़ख़ार, मातल जूदु वल करम'' अरे मेरा बाप नहीं मर गया, फ़ख़्र व शरअ् मर गया। जूदो करम मर गया। दीन व मज़हब को मौत आ गई। अब हम ग़रीब हो गए। बेकस हो गए, हमारा ख़बर लेने वाला न रहा। मैं अर्ज़ करता हूँ कि मेरी शहज़ादी! हुसैन[अ०] की जान! तुम न रोओ। तुम्हारे रोने से बाप का दिल दुखेगा। रूह बेचैन होगी, तुम्हारे बाप को दुनिया रो रही है, जानवर रो रहे हैं। इन्सान रो रहे हैं। हैवान रो रहे हैं। ज़मीन व आसमान ख़ून के आँसुओं से रो रहे हैं। मेरी शहज़ादी मत रो। दोस्त और दुश्मन रो रहे हैं।

हुसैन-हुसैनः एक परिचय

आयतुल्लाहिलउज़मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
अनुवादक - बी० ए० नक़वी नसीराबादी

परिचय की आवश्यकता उनके लिए है जो मोहर्रम के अवसर पर हुसैन-हुसैन की आवाज़ें सुनते हैं, पत्र-पित्रकाओं के मुख्य प्रकाशनों पर मोहर्रम में ''हुसैन नम्बर'' लिखा देखते हैं, मगर जानते नहीं कि यह हुसैन कौन है? या उनके लिए किसी घोड़े (शबीहे ज़ुलजनाह) को इस शान से देखते हैं कि बागें कटी हुई हैं, ख़ून बहा हुआ है, शरीर पर जा बजा तीर लगे हुए हैं अथवा किसी ताबूत को रक्तमय चादर से ढका हुआ देखते हैं और उनकी समझ में नहीं आता कि यह किस की यादगार मनायी जा रही है।

पहली दशा में नाम से व्यक्ति की तलाश होती है और दसूरी दशा में गुणों से व्यक्ति की खोज की तड़प उत्पन्न होती है और यही उपकरण अज़ाए मुहर्रम का वह उज्जवल मार्ग हैं, जिसके सुरक्षित रखने को हुसैन के अनुयायी अपने जीवन का सबसे बड़ा और बहूमूल्य ख़ज़ाना समझते हैं और विरोधीगण इनके मुक़ाबले में अपनी बुरी भावनाओं और अनुचित नीतियों को अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य समझते हैं।

यह परिचय का वह साधारण पहलू है जिसके लिए अधिक सोच-विचार की आवश्यकता नहीं, परन्तु अगर तीव्र दृष्टि से देखा जाय तो जो हज़रत हुसैन इब्ने अली अलैहिस्सलाम के नाम का स्मरण करते हैं और आप के व्याख्यान को दिनों-रात आरम्भ रखते हैं। उन्हें भी प्रायः आपके गौरव का पूरा ध्यान और आपके उस अमर कारनामे की गम्भीरताओं का समुचित ज्ञान नहीं है। इसलिए वह स्वयं भी परिचय के आश्रित हैं। मगर यह पहलू परिचय का वह पहलू है, जिसका मूल्य उसी समय अदा किया जा सकता है जब परिचय कराने वाला स्वयं भी इमाम हुसैन[अ०] के विषय में पूर्ण जानकारी रखता हो और यह दावा करना माया जाल में फंसे हुए एक मनुष्य के लिए कोई आसान बात नहीं है, बल्कि एक कठिन मार्ग है, जिसके कि तै करने का इस समय मैं अपने आप में शक्ति नहीं अनुभव करता और न इस संकुचित भाषण का निश्चित समय ही इसके व्याख्यान के लिए प्रर्याप्त हो सकता है।

हाँ, केवल यह परिचय उन्हीं लोगों के वास्ते है, जो हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के नाम से बिल्कुल ही अनभिग है। ऐसा तो प्रायः कोई शिक्षित न होगा, जिसने इस्लाम का नाम न सुना हो, धार्मिक दृष्टिकोण से इस्लाम धर्म संसार के सृष्टि से है और लगभग सभी धर्म प्रचारक ख़ुदा की ओर से इसी धर्म के प्रचार के लिए आये। मगर इस धर्म का नाम इस्लाम और इसके अनुयायियों का नाम मुस्लिम सब से पूर्व हज़रत इब्राहीम ने रखा और इस कारण से वह मुसलमानों को सबसे प्रथम पूर्वज समझे जा सकते हैं। हज़रत इब्राहीम के दो बेटे थे। इसहाक़ और इस्माईल। हज़रत इस्हाक़ सिलसिलए बनी इस्राईल के प्रथम पूर्वज थे। जिनमें हज़रत मूसा और हज़रत ईसा प्रसिद्ध धर्म प्रचारक हुए हैं और इन्हीं पुरुषों के समय में तौरेत, इन्जील और ज़बूर जैसी आसमानी पुस्तकें प्रकट हुईं। दूसरे हज़रत इस्माईल थे, जिन्हें आप के पिता हज़रत इब्राहीम ने आप की माता हाजरा के संग बालकाल्य अवस्था में ही मक्का पहुँचा दिया था। जिसमें ख़ान-ए-काबा स्थित है और ख़ान-ए-काबा को बनाने वाले यही पिता-पुत्र इब्राहीम और इस्माईल हैं।

इस्माईल के बारह पुत्र थे उनमें साबित और

क़िदार की सन्तान हिजाज़ में आबाद हुई और क़िदार की सन्तान में अदनान उत्पन्न हुए। जिनकी सन्तान में नज़र पुत्र कनाना और कथनानुसार क़हर पुत्र मालिक पुत्र नज़र और कथनानुसार क़ुसै पुत्र किलाब पुत्र मुर्रह पुत्र काब पुत्र लुई पुत्र ग़ालिब पुत्र फ़हर की सन्तान क़ुरैश के नाम से प्रसिद्ध हुई।

क़ुसै पुत्र किलाब ने बड़ा नाम उत्पन्न किया और बड़े नामी काम किये। उन्होंने विधान भवन (दारुन्नदवह) के नाम से एक भवन बनवाया। जिसमें पंचायती कार्य किये जाते थे। जनता के रहन-सहन, कर की वसूली और हाजियों के खाने-पीने आदि का प्रबन्ध किया तथा विधान आदि पारित किये। उन्होंने शराब-पान को बुरा बताया तथा उसकी बुराइयों को उचित ढंग से स्पष्ट किया। क़ुसै के पुत्रों में अब्दे मनाफ़ अपने कार्य और गुणों के कारण अपने पूर्वजों के उचित उत्तराधिकारी थे और इनके पुत्रों में हाशिम योग्य और प्रभावशाली थे। काबे की पवित्र सेवायें, हाजियों के खाने-पीने और रहने आदि का उत्तरदायित्व भी आपके ज़िम्मे था, जिसे आपने बड़ी योग्यता से निबाहा। इन में मुक़ाबले में उमैया पुत्र अब्दुल शम्स जो बनी उमैया का पूर्वज था। असफ़ल होकर और अपने देश को छोड़कर शाम की ओर चला गया और वहीं पर अपना मोर्चा लगाया।

हाशिम इनकी पदवी इस कारण से हुई कि इन्होंने अकाल के समय में मक्का के निवासियों को रोटियों के टुकड़े शोरबे में भिगो कर खिलाये! अरबी में हशम चूरा करने वाले को कहते हैं। हाशिम के बेटे अब्दुल मुत्तलिब थे जो उच्चता, तेजस्व और प्रसिद्धि में अपने पूर्वजों से भी आगे थे और सय्यदुल बतहा के नाम से प्रसिद्ध हुये, जो उनकी सन्तान में शेष रह गया और उन्हीं की सन्तान है जो सादात कहलाती है।

अब्दुल मुत्तलिब के दस पुत्रों में से दो पुत्र अब्दुल्लाह और अबूतालिब थे। अब्दुल्लाह के पुत्र इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा थे, जिन्होंने संसार को एकेश्वरवाद की शिक्षा दी और मूर्ति पूजा, अधिकार पूजा, धन पूजा, बल्कि हर उस वस्तु के पूजा के प्रति विरोध प्रकट किया जो अल्लाह की ओर से ध्यान हटाकर अपनी ओर आकर्षित करती है।

अबुतालिब के सुयोग्य पुत्र हज़रत अली थे। जो इस्लाम के प्रचार में मुहम्मद साहब के साथ सदैव रहते थे। यहाँ तक कि जब इस्लाम के विरोधियों ने सैनिक शाक्ति के साथ मुसलमानों पर चढ़ाई की और बद्र व ओहद, ख़न्दक़ और ख़ैबर की लड़ाइयाँ हुईं तो इन सभी युद्धों में न्याय व सच्चाई की ईश्वरीय शक्ति के साथ हज़रत अली की तलवार थी, जो हर स्थित में इस्लाम की सफ़लता का कारण बनी रही।

हज़रत मुहम्मद साहब के कवल एक ही पुत्री थी फ़ातिमा ज़हरा, जिनका उनके उच्चतम आदर्शों के कारण आप इतना आदर करते थे कि जब वह आप के समीप आती थीं, तो आप आदरवश खड़े हो जाते थे और अत्याधिक हदीसें आपने इनके गौरवह से सम्बन्धित बयान किये, जिनमें एक यह भी थी कि वह स्वर्ग की तमाम स्त्रियों की प्रधान और धार्मिक स्त्रियों की भी प्रधान हैं बताया कि फ़ातिमा मेरे अंग का एक भाग है। इनकी शादी हज़रत अली से सम्पन्न हुई और इन्हीं दोनों पवित्र और आदरणीय माता-पिता से दो सुयोग्य पुत्र उत्नन्न हुये। एक इमाम हसन और दूसरे इमाम हुसैन। जिनका नाम हुसैन-हुसैन के शब्दों में मुहर्रम के अवसर पर अधिकतर नगरों और ग्रामों के मकानों और लगभग प्रत्येक मार्ग पर सुनाई देता है।

हज़रत इमाम हुसैन इस्लाम धर्म के प्रर्वतक मुहम्मद साहब के नाती तथा हज़रत अली के पुत्र थे, आपका जीवन इस्लामी शिक्षा का पूर्ण आदर्श था और शिया मुसलमान आपको तीसरा इमाम अर्थात मुहम्मद साहब का तीसरा उत्तराधिकारी और रसूल के पश्चात् खुदा की ओर से नियुक्त किया हुआ तीसरा धर्म-प्रदर्शक मानते हैं।

शाम का शासक यज़ीद, जो बड़ा ही चरित्रहीन, शराबी, झूठा और विश्वासघाती था। आप से अनुचित ढंग से अपनी आज्ञाओं हेतु प्रण लेना चाहता था जिसे आपने अस्वीकार कर दिया। इसी कारण यज़ीद की सेना ने आप पर चढ़ाई कर दी और दस मोहर्रम इकसठ

बक़िया पेज 14........... पर

इस्लाम पोथी

अल्लामा नज्म आफ़न्दी

अल्लाह बना दे इसे आकाश की बानी
कहनी मुझे भाषा में है इस्लाम कहानी
लिक्खी न गई कोई जो इस तरह की पुस्तक
इस्लाम को समझे नहीं इस देश के सेवक
चर्चे हैं कि फैला है ये तलवार के बल पर
स्थान है बे नींव के दीवार के बल पर
सब ढूँढ रहे हैं उसे शीशे के नगर में
शाही के समाचार हैं दुनिया की नज़र में
उस रूप में सत धर्म का पैग़ाम नहीं है
माया के चमत्कार में इस्लाम नहीं है
सच्चाई की शक्ति का महाकाज है इस्लाम
समझे जो कोई तो जनता राज है इस्लाम
इस धर्म का दुनिया में संदेसा था जब आया
क़ाबू में ग़रीबों की न माया थी न काया
कमज़ोर को आराम न बाहर था न घर में
अंधेर ही अंधेर था संसार नगर में
वह दिन थे कि ढूँढे नहीं मिलती थी भलाई
छायी हुई थी सारे ज़माने पे बुराई
सच्चाई का प्रचार न उत्तर था न दक्खिन
बिगड़े हुए मुद्दत से थे इन्सान के लच्छन
चमका जो अरब देश की क़िस्मत का सितारा
कर्तार ने आकाश से एक नूर उतारा
मक्के में रिसालत की बिछायी गयी मसनद
पैदा हुये हाशिम के घराने में मुहम्मद
इस तरह दुलहन भी कोई देखी न संवरती
मुखड़े की पड़ी छूट तो जगमग हुयी धरती
क्या जानिये किस भेस में किस रूप में आया
सुनते हैं किसी आँख ने देखा नहीं साया

छः साल में माँ-बाप जो परलोक सिधारे
बचपन से लड़कपन हुआ दादा के सहारे
जब सर से उठा आप के दादा का भी साया
एक और प्रेमी ने कलेजे से लगाया
बच्चों से ज़्यादा ये भतीजे पर फ़िदा थे
पाला अबू तालिब ने जो हज़रत के चचा थे
छोटे ही से सिन में थीं समझ बूझ की बातें
कटते थे बड़े सोंच में दिन हो कि हों रातें
दाया की तरह सब की निगाहों में भला था
ये चार बरस घर में हलीमा के पला था
सुन्दर था जो हर काम तो हर बात थी बाला
दाया को ये अचरज था कि बच्चा है निराला
बे वक़्त न खाया कभी बे वक़्त न सोया
मचला न कभी दूध के कारन न वह रोया
इस चाँद में आखों ने कोई खोट न पायी
जो मन की सफ़ाई थी वही तन की सफ़ाई
भूले से कभी अपनी बड़ाई न जतायी
बेटों को हलीमा के समझता रहा भाई
बातें न घमण्डी कभी हृदय में समायी
यूँ साथ दिया उनका कि भेड़ें भी चरायीं
बच्चों की तरह उसने कोई खेल न खेला
उसके लिये दुनिया में तमाशा था न मेला
गाहक था वह हर आन ग़रीबों की ख़ुशी का
संसार में दुख देख न सकता था किसी का
बीता वह लड़कपन का समय आयी जवानी
इंसान के जीवन की घड़ी सब से सुहानी
निर्दोष थी जो फूल की चन्दन की तरह से
जो पाक रही सुबह के दामन की तरह से

सतवन्त था ऐसा जिसे दुश्मन ने भी माना
सादिक़ उसे बचपन में ही कहता था ज़माना
नेकी ने बचाया था ज़बानों के छुरों से
वह दूर ही रहता था बुरायी से बुरों से
निर्बल को भी सुख हो इसी उलझन में पड़ा था
विधवा से किया ब्याह कि पुण्य इसमें बड़ा था
सरपंच बना क़ौम का झगड़ा भी चुकाया
धरती को बड़ी सख़्त लड़ाई से बचाया
अन-जल के लिये करना ही पड़ता है ये कन्धा
व्यापार बुज़ुर्गों की तरह इसका चलन था
उभरी हुयी थी हाथ में ईमान की रेखा
व्यापार में ऐसा कोई धर्मी नहीं देखा
कुछ दिन में नयी प्यार की सूरत नज़र आई
पैदा हुआ एक सबसे बड़ा उसका फ़िदायी
एक तारों भरी रात में आँचल जो समेटा
चौथा अबूतालिब को मिला चाँद सा बेटा
काबा में हुआ जिसका जन्म ये वह बली है
अल्लाह के घर में हुआ पैदा कि अली है
घर उसका चलन उसका वही ज़ात वही है
जो बात मुहम्मद की है हर बात वही है
जनता की भलाई में बहुत रंज सहे हैं
हर काम में इन दोनों के दिल एक रहे हैं
जिन बातों में थी खोट बहुत उनसे परे थे
भूले से न की मूर्ति-पूजा वह खरे थे
दिल जिस से मिले ऐसा न था मेल किसी से
लाखों में मुहम्मद की मोहब्बत थी अली से
जी लगता था बस्ती से अलग शहर से बाहर
स्थान बना रखा था एक ग़ार के अन्दर
जो क़ौम थी वह पाप के चक्कर में पड़ी थी
इन्सान है करसते पे ये फ़िक्र उसको बड़ी थी
क्या कष्ट की भरमार है अपराध का रेला
बैठा वह यही सोंचता रहता था अकेला
करता है हर एक अपने क़बीले की बड़ाई
बे बात भी हो जाती है आपस में लड़ाई
बदले का लगा रोग तो कम ही नहीं होता
दादा की जगह लड़ने को तय्यार है पोता

आनन्द यहूदी है जो मूँह सूद का बरसे
ईसाई हैं भटके हुए ईसा के डगर से
कुछ लोग इसे अपनी समझते हैं जो हेटी
धरती में दबा देते हैं पैदा हो जो बेटी
इन्सान ने इन्साँ का बनाया है यह क्या हाल
है जानवरों से भी गुलामों का बुरा हाल
किस ओर है संसार का बहता हुआ धारा
नेकी से हो सम्बन्ध तो मुश्किल है गुज़ारा
करते ही नहीं फ़र्क बुरे और भले में
अवक़ात गुज़रते हैं शराब और जुए में
कब तक यही अन्याय का व्यापार रहेगा
कब तक यह अधाधुन्ध समाचार रहेगा
दिन रात ग़रीबी है अमीरी का निवाला
आँखे हैं मगर कोई नहीं देखने वाला
एक रोज़ इसी ध्यान में ओढ़े हुये चादर
चुपचाप वह लेटा हुआ था ग़ार के अन्दर
दुनिया को बदलने का चलन सोच रहा था
इन्सान की मुक्ति के जतन सोच रहा था
जैसे कभी गर्मी में बड़ी प्यास लगी हो
सामान न हो कोई मगर आस लगी हो
दुहरा ही रहा था ये कभी मन में
पैदा हुआ एक भाव नया मन की लगन में
जैसे कोई जागे हुये को और जगा दे
तो जैसे कोई प्यार के दीपक को बढ़ा दे
उस आन में जिबरील फ़रिश्ते की ज़बानी
धरती पे सुनी उसने यह आकाश की बानी
ऐ कमली में लिपटे हुये उठ जिक्रे ख़ुदा कर
दुनिया को जगा, दीन का पैग़ाम सुनाकर
सब उसके सिंहासन में वह पर्वत हो कि रायी
बन्दों को बता पालने वाले की बड़ाई
घर अपने चला सुन के यह(।) काम की आवाज़
हर ओर से पैदा हुयी परनाम की आवाज़
एक एक ने त्रिलोक धनी कह के पुकारा
जंगल ने पहाड़ों ने नबी कह के पुकारा
बोझ इतना बड़ा कैसे अकेला कोई सह ले
साथी जो थी जीवन की बताया उसे पहले

फिर उसने कही भेद की यह बात अली से
मीठे हुए यह बोल उसे मिसरी की डली से
बेवा भी हुयी भाई भी इस्लाम के साथी
दोनों यह मुहम्मद को मिले काम के साथी
अब ज़ैद का नम्बर था अबूबक्र की बारी
चुपचाप ये प्रचार यह सेवा भी है न्यारी
दो एक के मन होने लगे रोज़ उजागर
बूँदें जो यह पड़ने लगीं बनने लगा सागर
फिर मन में नया हुक्म यह अल्लाह का चमका
अपनों ही में प्रचार करो पहले धरम का
कुनबे को इकटठा किया खाने पे बुला के
सब उठ गये खा ही के हंसी उसकी उड़ा के
मुश्किल है कि छोड़े कोई धर्म अपना पुराना
सच्चा भी समझकर यह बचन उसका न माना
फिर दूसरे दिन (को) भी घर अपने बुलाया
अल्लाह की कृपा का समाचार सुनाया
जो साथ मेरा देगा यह बात उसने बतायी
वह मेरी जगह लेगा वह होगा मेरा भाई
इक़रार किया इतनों में बस एक वली ने
मैं आपका साथी हूँ कहा उठ के अली ने
यह सुनके फिर उन लोगों से कहने लगे हज़रत
देखो मेरे भाई को करो इसकी इताअत
इन शब्दों में शक्ति न किसी को नज़र आयी
पहले की तरह सब ने हंसी उसकी उड़ाई
कुन्बों में किसी और का देखा न सहारा
विश्वास था अल्लह का तो हिम्मत नहीं हारा
इस दीन का प्रचार अमीरों को न भाया
पहले ये ग़रीबों के ही हृदय में समाया
किस प्रेम का उपदेश था क्या शब्द मनोहर
मक्के में मुसलमाँ नज़र आने लगे घर घर
सब हो गये आख़िर (को) मुसलमानों के दुश्मन
बे जोड़ हज़ारों में था दस बीस का जीवन
पैसे का उधर ज़ोर था गिनती में सिवा थे
थोड़े से धरम वीर मनुष्य चीज़ ही क्या थे
कितनों के गले में तो गुलामी के थे बन्धन
वह जुल्म हुए उनपे कि जीना था अजीरन

जलती हुयी रेती पे कभी उनको लिटाया
पत्थर के तले धूप में ले जा के दबाया
बैलों की तरह नाघ के बाज़ारों में खैंचा
रस्सी में गले बांध के बाज़ारों में खैंचा
आदर न पड़ोसी का न रिश्ते की रही पत
हट धर्मों के हाथों से ग़रीबों की थी दुर्गत
सौ ज़ोर उधर थे इधर एक ज़ोर अहिंसा
एक ओर था अन्याय तो एक ओर अहिंसा
डन्डों से कभी और कभी भूक से मारा
सब जुल्म थे अल्लाह के बन्दों को गवारा
लिक्खा है कि पीटे गये इस तरह बिचारे
संसार से अम्मार के माँ-बाप सिधारे
चढ़ते हुए दरया का हुआ कुछ न उतारा
बढ़ने से रुका यूँ भी न इस धर्म का धारा
कमज़ोर मुसलमान ने जब हार न मानी
अब सब ने मुहम्मद के सताने की भी ठानी
सर पर कभी कूड़े से भरे तश्त गिराये
हत्यारों ने काँटे कभी रस्ते में बिछाये
मारे कभी पत्थर कभी दी आपको गाली
सीटी कभी लड़कों ने बजायी कभी ताली
दम जिस से निकल जाय वह अन्याय किया था
उक़बा ने तो चादर से गला घूँट दिया था
जिस रोज़ अबूजहल ने हज़रत को सताया
हमज़ा थे चचा आपके गुस्सा उन्हें आया
गर्दन से जुआ मूर्ति-पूजा का उतारा
इस्लाम भी लाये और अबूजहल को मारा
चिन्ता न थी कुछ मार के अन्जान थे ऐसे
चुप हो गया वह पिट के यह बलवान थे ऐसे
अतबा था उमय्या की जो संतान का सरदार
एक रोज़ किया उस ने पयम्बर को नमस्कार
कहने लगा दुनिया तुम्हें देती है उलहना
ऐ मेरे भतीजे मुझे कुछ तुम से है कहना
तुम भी इसी बस्ती इसी भूमि में पले हो
पुरखे भी तुम्हारे हैं भले तुम भी भले हो
बातें जो नयी करते हो क्या इसका है कारण
क्यों तोड़ रहे हो ये धरम देश के बन्धन

जाति को बड़ा तुम ने तो झगड़े में है डाला
अवगुन है ये क्या मूर्ति पूजा में निकाला
अगलों के धरम को जो बुरा तुमने बताया
सब अपने बड़ों बूढ़ों को है दोष लगाया
इस देश में विपता यह नयी टूट पड़ी है
आपस में तुम्हारे ही लिये फूट पड़ी है
मन सब के ब्याकुल हैं वह नर हो कि हो नारी
शिक्षा तुम्हें कुछ दूँ अगर इच्छा हो तुम्हारी
जो कुछ मुझे कहना है वह शायद तुम्हें भा जाये
सब के लिये अच्छा हो समझ में अगर आ जाये
दो जग के स्वामी ने किया उसका न बे आस
तय्यार हुआ सुनने को उतबा की वह बकवास
उतबा ने कहा तुम को जो दौलत की हो चाहत
वह ढेर लगा देंगे कि बन जायेगा परबत
हम सब में अगर चाहते हो अपनी बड़ाई
ये भी हमें सौ जान से मंज़ूर है भाई
इस ठाठ से अब तक न यहाँ कोई बिराजा
चाहो तो बना दें तुम्हें इस देस का राजा
कुछ रोग अगर है किसी गुनवान को लाये
ये हाल तुम्हारा किसी वेदी को दिखायें
रहने के नहीं फिर ये समाचार कुढ़ेंगे
दो रोज़ की सेवा में तो हो जाओगे चन्गे
ये सुन के उसे आपने कुरान सुनाया
मतलब था कि राज़ अपना यही है यही माया
हृदय में शक्ति और न ज़बान पर कोई बस था
सुन हो गया सुन कर यह हुयी उसकी अवस्था
अतबा को अचम्भा था ये बलवन्त है कैसा
राज अपना है मंजूर जिसे और न पैसा
जाकर कहा अपनो से कि झगड़े को नबेड़ो
कहना मेरा मानों तो मुहम्मद को न छेड़ो
अब इससे उलझ कर कभी बात अपनी न खोना
सुन कर जो मैं आया हूँ वह जादू है न टोना
फूल ऐसी सुगन्ध(ा) के चुने ही नहीं मैने
इस ज्ञान के उपदेश सुने ही नहीं मैंने
यह बोल कुछ ऐसे थे कि आग और लगा दी
झगड़े को घटाने की जगह बात बढ़ा दी

मक्के में हुये ठौर से बे ठौर मुसलमान
दिन रात सताये गये अब और मुसलमान
फ़रमाया पयम्बर ने कि कुछ रोज़ को टल जाओ
छोड़ो यह जन्म भूमि हबश देश निकल जाओ
सच्चे हैं मनुष्य न्याय है उस देश में जा लो
परजा भी भली उसकी है राजा भी दयालू
यों और भी प्रसिद्ध हुई बात यह सब में
व्यापार का रिश्ता था हबश और अरब में
जो रह गये मक्के में वह नाचार सिवा थे
हबशा जो गये 100 से वह दो चार सिवा थे
इन सब के थे सरदार सगे भाई अली के
भाई हुए रिश्ते में चचेरे जो नबी के
कम उम्र थे उन सब में मगर सब से कड़े थे
नाम उनका था जाफ़र कि ये बुद्धि में बड़े थे
पहुँचे जो हबश में तो कोई रंज न दुख था
राजा के भी उपकार थे प्रजा से भी सुख था
राजा हो कि प्रजा वह कलीसाई थे सारे
इस देस में बसते थे जो ईसाई थे सारे
पहले ही थे बैठे हुये सर धुन के कुरैशी
झल्ला गये ये ख़ैर ख़बर सुन के कुरैशी
परदेस में बादल जो इधर प्रेम से बरसे
कुछ लोग चले आग लगाने को इधर (उधर) से
सीनों में दहकता (हुआ) समशान लिये थे
राजा के लिये भेंट का सामान लिये थे
इन सब में मनुष्य था यही इस काम के ढब का
इस टोली में मुखिया अमरे आस था सब का
मिल कर कहा राजा से अधर्मी हैं ये सारे
दे दें हमें सरकार गुनहगार हमारे
इस काम की रिश्वत से जो हर जेब थी भारी
कहने लगे सब उनकी सी गिरजे के पुजारी
राजा ने सुने जब ये मुसलमान के लच्छन
दरबार में बुलवाया उन्हें न्याय के कारन
पूछा ये नया धर्म है क्या तुम ने निकाला
ईसाइयत और मूर्ति पूजा से निराला
साहस था बहुत इनको जो मज़हब की तरफ़ से
जाफ़र ने जवाब उसको दिया सब की तरफ से

हम वह हैं कि थी हम में बुराई ही बुराई
सोने पे सुहागा थी बराई पे ढिटाई
सीधी थी न सच्ची थी कोई बात हमारी
हम झूट के सेवक थे तो पत्थर के पुजारी
हमने उन्हीं बातों में सदा उम्र गंवायी
भाई से रहा बैर पड़ोसी से लड़ाई
निर्धन की अवस्था का था न कोई उपाय
बलवान का कारज था कि निर्बल को सताय
पैदा हुआ इतने में मनुष्य एक महालत
नेकी का जो दरया है बड़ाई का है परबत
बे मांग मिली उस से हमें धर्म की भिक्षा
जो बात है उसकी वह बड़ाई की है शिक्षा
सिखलायी हमें एक निरंकार की पूजा
उसने कहा अल्लाह नहीं है कोई दूजा
अल्लाह की सूरत नहीं सूरज को न पूजो
अपनी ही बनायी हुई मूरत को न पूजो
विधवा का अनाथों का कभी माल न खाओ
भूले से कभी ना किसी अबला को सताओ
आपस में कभी ढंग लड़ाई का न डालो
जो बात बुराई की है सब बात को टालो
उसने हमें सच्चाई के ढर्रे पे लगाया
एक झूठ में सौ पाप हुये ये (भी) बताया

हम ने जो किया उसके हर उपदेश का पालन
मक्के में जो हठ धर्म थे सब हो गये दुश्मन
राजा ने कहा उसके वचन क्या हैं बताओ
आकाश से उतरी है जो पुस्तक वह सुनाओ
जाफ़र ने बचन सूरए मरयम के सुनाये
सुनकर उन्हें आँसू बहुत आँखों से बहाये
कहने लगा सत्य धर्म की है ये भी निशानी
इन्जील की क़ुरान की है एक ही बानी
फ़रयाद जो लाये थे कहा उनसे कि जाओ
दे दूँगा उन्हें तुम को ये आशा न लगाओ
बोला अमरे आस ख़बर है तुझे सुलतान
क्या हज़रते ईसा को समझते हैं मुसलमान
था सब को ही मालूम ये भेद उनके धर्म का
ईसा को समझते हैं ये अल्लाह का बेटा
सब को था यह धड़का कि बिगड़ जायेगा राजा
कुछ और सुनेगा तो अकड़ जायेगा राजा
जाफ़र ने कहा फिर भी कहय आँख मिला के
बन्दे भी हैं और पयम्बर भी ख़ुदा के
राजा ने कहा सब के ये उपदेश है सच्चा
एक तिनके बराबर वह नहीं इस से ज़्यादा
इस्लाम के दुश्मन हुये यह सुन के निरासे
मक्के को प्यासे ही गये ख़ून के प्यासे

बक़िया हुसैन-हुसैनः एक परिचय

हिजरी को कर्बला की पवित्र भूमि पर तीन दिन की भूख और प्यास में आपके जीवन दानी मित्र, नवयुवक व कम आयु पुत्र, भाई, भतीजे, भाँजे यहाँ तक कि दूध पीता छः महीने का बालक तक शत्रुओं की तलवारों, नैज़ों और तीरों का निशाना हो गये।

आपके ख़ेमों में आग लगा दी और आपके पारिवारिक सदस्यों को जिनमें केवल एक पुरुष अर्थात् रोगग्रस्त पुत्र ज़ैनुल आबदीन थे और जिन में इस्लाम धर्म के प्रर्वतक मुहम्मद साहब की अपनी नवासियाँ तक मौजूद थीं बन्दी बनाकर अत्यन्त शत्रुता तथा अमनुष्यता के साथ कर्बला से कूफ़ा और कूफ़ा से शाम ले जाये गये।

यही दुखद और हृदय विदारक कारनामा है, जिसकी याद प्रत्येक वर्ष मुहर्रम मास में जीवित की जाती है और उसकी याद में पत्र-पत्रिकाओं के मुख्य प्रकाशन ''हुसैन नम्बर'' अथवा ''मुहर्रम नम्बर'' के नाम से प्रकाशित किये जाते हैं।

✡✡✡

आज़ाद भारत से करबला की याद की माँग

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
अनुवादक - मु० र० आबिद

जाने दीजिये किसी ऐसी पार्टी को जो बल (Might) को सत्य (Right) समझती और बल-वर्चस्व को सात्विकता के सिद्धान्तों में से ठहराती हो। पन्थ के लेहाज़ करबला के अमर शहीद का संग्राम (जिहाद) और आपकी सदा वाली सफलता उस पार्टी के उसूल की हार है, इसलिए उस पार्टी के लिए करबला-घटना की याद यादगार के रखने में कोई ख़ास खिंचाव न हो, तो अचम्भे की बात नहीं। बेशक ये करबला के अमर शहीद की बेगुनाह सात्विकता का बल है कि ये लोग भी खुलकर उनके अमर कारनामे के विरोध में मुँह खोलना नहीं चाहते या चाहते हैं तो हिम्मत नहीं कर पाते या हिम्मत भी करते हैं तो सफलता महसूस नहीं करते फिर भी ढके छिपे तरह-तरह से हुसैन[अ०] की अज़ा (सोग, ग़म मनाने) को मिटाने की कोशिशें, जो अकसर देखी जाती हैं, उस पार्टी के मनोभावनाओं को उजागर करती हैं।

पॉलिटिक्स की दुनिया में पच्छिमी समाज बस बल को सत्य समझने ही के परहरी रहे हैं जिनसे कोई छूटा नहीं है। यह और बात है कि कोई हिटलर होकर नंगी तलवार बन जाये, और कोई अपनी बल-भक्ति पर पॉलिटिक्स की पालिश चढ़ाकर 'विश्व-शान्ति' के लिए बल का झण्डा ऊँचा करे, पर उन में हरेक के दिल दिमाग़ में हिटलर-वाद अपने पूरे तेज के साथ रचा बसा है। इसी लिए ये आपस में लाख समझौते करें, पर वे कभी विश्व-शान्ति के हित में नहीं हो सकते इसलिए कि कभी दो बाबा एक चटाई पर और दो राजा एक राज्य में इकटठा नहीं होते।

फिर वह समय और था जो जब संसार का हर राज अलग घेरा रखता था, अब सारा संसार एक राज समझा जाता है। वे अगले राजा थे जिनमें से दो एक राज में न रह सकते थे, यह इस ज़माने के सत्ता वाले हैं जिनमें से दो हिटलर एक राज में इकटठा हैं, फिर इन हिटलरों में आपस में कोई समझौता हो तो वह कहाँ बाक़ी रह सकता है।

यूरोप, जो ईसाई धर्म के दावे के साथ अब जीवन के हर विभाग में वस्तुवादी (materialistic) हो गया है किसी ऐसी लड़ाई को सोच ही नहीं सकता जिसका आधार अध्यात्मवाद (spiritualism/रूहानियत) पर हो। इसलिए यह एक कड़वी सच्चाई है कि यूरोप के लेखकों ने किसी मटिरियल (material) ढंग से देशों को जीतने वाले किसी महान विजेता के कारनामे पर ध्यान नहीं किया क्योंकि उनकी खोपड़ियों में वह नज़र बाक़ी ही नहीं रही है जो इस महान विजय की रूपरेखा को देख सके जिसे इस बेबसी और बेकसी की हालत में हुसैन[अ०] ने अपने दुश्मन के मुक़ाबले में पायी।

पूरब में भारत ऐसा क्षेत्र है और भारत ऐसा राष्ट्र है जिसने सदा अपने को आत्मवाद (रूहानियत) का पुजारी दिखाया। जब संसार के समाज हिंसा की दौड़ में लगे हुए थे, यहाँ से जन्मे धर्म और उनके मानने वाले समूहों ने अहिंसा में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश

की। किसी ने अगर आदमी का ख़ून बहाने से मना किया तो उन्होंने जानवरों की जान की हिफ़ाज़त को अपना ध्येय बना लिया। कुछ ने इसे लाभदायी जानवरों की हद में रखा, तो कुछ ने इसको पीड़ा-दायी जानवरों और कीड़े मकोड़ों तक पहुँचा दिया और किसी भी जीव की जान लेना उनके लेहाज़ से पाप ठहर गया।

अब आख़िर में गाँधीजी ने तो अंग्रेज़ों से अपनी लड़ाई का आधार अहिंसा पर रखा। उन्होंने 'सत्य एक बल है' के उसूल को बड़े बल के साथ पेश किया, उसी झण्डे के तले अपने परे ठीक किये जिसमें उन्होंने आख़िरकार सफ़लता पाकर देश की आज़ादी के सपने को सच बना दिया जो आँखों के सामने है। यहाँ उनकी इस सफ़लता से प्रभावित होकर अब तो कभी-कभी यूरोप वाले भी सत्य और उसके बल की बात करने लगे हैं।

गाँधी जी के अहिंसावाद की हदें हमारे मानक के लेहाज़ से मध्य-बिन्दु से अलग सही, फिर भी वह उसूल जो उनके कार्य-दर्शन का आधार है, बहुत कुछ अहलेबैत[अ॰] (हज़रत मुहम्मद[स॰] के घर वाले) के इस्लामी दर्शन से एक हैं जिसको बहुत ही खुले ढंग से कार्य रूप से बरत कर और उसके बेपनाह नतीजे को तजरुबे की दुनिया में सामने लाकर हज़रत इमाम हुसैन[अ॰] ने प्रस्तुत किया था। फिर यह एकता कोई संयोगवश (Co-incidental) घटना न थी बल्कि गाँधी जी ने साफ़-साफ़ इसकी अभिव्यक्ति की कि उन्होंने शुरु ही में करबला घटना का अध्ययन किया था और उससे प्रभावित भी हुए थे। उन्होंने बार-बार कहा कि वह आज़ादी की लड़ाई हुसैन[अ॰] को अपना नेता मानते हैं। इसी पर नमक (आन्दोलन) वाले मैदान में जाने के समय उन्होंने अपने साथियों की संख्या बहत्तर रखते हुए यह दिखाया कि वह इस प्रकार हज़रत इमाम हुसैन[अ॰] के अनुसरण का प्रदर्शन करना चाहते हैं।

ऐसे में देश के आज़ाद होने के बाद सिर्फ़ भारत से यह आशा जोड़ी जा सकती है कि वह करबला के अमर शहीद की याद को फलने-फूलने का अवसर दें। जबकि देश का झुकाव इसके पहले हमेशा हुसैन की अज़ा के अनुकूल रहा है जिसके लिए ग्वालियर आदि की अज़ादारी एक कार्यात्मक और ऐतिहासिक सुबूत है।

हिन्दुओं का हुसैन[अ॰] की अज़ा में समर्पण के साथ भाग लेना इस आधार पर न था कि मुसलमान विजेता और सत्ताधारी थे और मशहूर कहावत है कि 'प्रजा राजा के धर्म पर होती है', 'हारा राष्ट्र विजेता के प्रभाव को स्वीकार कर ही लेता है' हरगिज़ ऐसा नहीं है इसलिए कि विजेताओं के गिरोह में बहुत सी ऐसी रीतियाँ चलन में थीं जो अपनी मनोहरता के होते हुए भी हिन्दुओं में कुछ भी लोकप्रियता न पा सकीं जैसे क़व्वाली आदि, यहाँ तक ईद, बक़रईद जो मुसलमानों का व्यापक उत्सव और उनके उत्सवों में सबसे ज़्यादा उजागर चीज़ है, उससे देश के निवासियों ने कोई नाता नहीं जोड़ा, बल्कि जहाँ तक रीतियों की बात है, ख़ुद मुसलमानों ने हिन्दुओं का प्रभाव लिया, हिन्दू उनसे बिलकुल ही प्रभावित नहीं हुए। दोनों के शादी बियाह और मौत आदि की रीतियों का अध्ययन कीजिए और देख लीजिए कि इस तरह से कौन विजेता दिखाई देता है और कौन जीता हुआ। मगर अज़ा!

फिर इस पर भी ध्यान देना होगा कि विजेता पार्टी के अधिकतर लोग अज़ादारी (इमाम हुसैन[अ॰] के सोग की रीतियाँ) के साथ ख़ुद कोई लगाव रखते थे या अलगाव? मैं तो समझता हूँ कि इनमें ज़्यादा ने इस याद के साथ कोई हिम्मत बढ़ाने वाला बर्ताव कभी नहीं रखा, इस से साफ़ उजागर है कि हिन्दुओं में इमाम हुसैन[अ॰] का सोग (अज़ा) का लोकप्रिय होना किसी भौतिक दबाव या प्रभाव का नतीजा न था, बल्कि देश का स्वभाव इस ओर था और यहाँ की परम्पराएँ इसके अनुकूल थीं। इसी आधार पर न सिर्फ़ उन गुटों ने जो साफ़-साफ़ 'जीते हुए' थे बल्कि उन राज्यों ने जिन्होंने आधीनता न मानी, बल्कि वे मुसलमानों के बहुत कड़े प्रतिद्वन्दी (Rival) सिद्ध हुए थे, दुख्यारे अत्याचार-पीड़ित के सोग को मन के लगाव के साथ स्वागत किया। अगर ग्वालियर में इस अज़ा को बन्द किया जा रहा है तो यह इस युग को अप्राकृतिक माहौल और तासुबों का नतीजा है जो ख़ुद अपने गाँधी जी ऐसे नेता को गोली का

निशाना बना देने के लिए तैयार होते हैं। तो अगर इमाम हुसैन^अ० की अज़ा को मिटाने पर उतारु हैं तो क्या अचम्भा है। मगर देश की सुलझी हुई Balanced मान्सिकता, जो स्वस्थ्य माहौल में पली हो, इमाम हुसैन^अ० की अज़ादारी (सोग-चलन) से कभी भी अजनबीपन का सबूत नहीं दे सकती है।

अब उन बयानों को देखें जो हमारे देश के ख़ास-ख़ास नेताओं की ज़बान और कलम पर बराबर आते रहे हैं।

1361^हि० की यादगारे हुसैन (इमाम हुसैन^अ० की शहादत की 1300वीं याद) के जलसे के अवसर पर हमारे देश के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि इस मौक़े पर हम भेद भूल गये, हमारे तर्कों का मुँह बन्द हो गया और हम दोस्ती, हमदर्दी के तरीक़े पर एक हो गये हैं इसलिए कि एक बड़ी हस्ती या एक बड़े कारनामे की यादगार सारी दुनिया को एक भाईचारे के रिश्ते में पिरो देती है यहाँ तक बीते ज़माने के धंधलके में बसने वाली याद भी चौका देती है।

आज हम बड़े-बड़े व्यक्तियों के बीच और सरीखे बदलावों की चौखट पर खड़े हैं, हमारे लिए यह उचित है कि हम इतिहास (History) के अहम वाक़िओं की ओर ध्यान दें और पहले के उजागर कारनामों से सकत पायें।

सामने की बात है कि वे बड़ी घटनाएँ और सरीखे बदलाव आज से दस बरस पहले कुछ और हो सकते है मगर इसमें शक नहीं हो सकता कि ये बड़ी घटनाओं और सरीखे बदलावों की चौखट पर खड़े होने की बात आज भी उसी तरह बनी हुई है जैसे उस समय थी बल्कि ज़िम्मेदारी बढ़ जाने की वजह से इस समय इन घटनाओं और बदलावों का महत्व बहुत ज़्यादा हो गया है। अतः विश्वास और त्याग के एक ऐसे बड़े कारनामे की याद जो आपस के भेदभाव को भुला सकती हो और सारे संसार को भाईचारे के एक धागे में पिरोती हो आज जितनी ज़रूरी है उतनी शायद उस वक़्त न हो जब पंडित जी के ज़बान और क़लम पर आये थे।

एक दूसरे सन्देश में, जो आपने हुसैन डे कमेटी, बम्बई (मुम्बई) को भेजा था, लिखा है कि इस शहादत ने अपना सब कुछ बलि कर दिया मगर एक अत्याचारी राज के सामने सर नहीं झुकाया। उन्होंने ये ख़याल नहीं किया कि हमारी भौतिक शक्ति दुश्मन के मुक़ाबले में कम है, उन्हें विश्वास की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति थी जो हर भौतिक शक्ति को नीची समझती है। हर सम्प्रदाय और जाति के लिए ये बलिदान सन्मार्ग का दीपक है।

यह सन्देश जिसे पंडितजी ने विश्वव्यापी बताया है, क्या हिन्दुस्तान के लिए उसी समय तक के काम का था, जब तक वह गुलामी का जीवन बिता रहा थ? क्या अत्याचारी के सामने सर न झुकाने की अपेक्षा किसी ख़ास हालत साथ ख़ास है। वास्तव में एक शासक के लिए बड़ी ज़रूरत है कि वह अत्याचारी के सामने समर्पण कर सर झुकाने से दूर रहे जिस तरह राजगद्दी पर बैठे हुए किसी यज़ीद की बैअत का ठुकराना ज़रूरी है, उसी तरह गोडसे की तरह के लोगों की कारवाइयों से न धौंसने की कड़ी ज़रूरत है।

हमारा आज़ाद राज्य से इस समय उसके दोस्तों और सहानुभूति करने वालों को भी ख़ुद अत्याचारी होने की उतनी शिकायत नहीं है जितनी अत्याचारियों की अन्देखी करने की शिकायत है। अक्षे ब्रहमचारी का मरनवृत इसी अत्याचार से सहमति के विरूद्ध अनशन का अपने आप में एक प्रदर्शन है। हम जानते हैं कि देश में हिंसा पर झुके अनसुलझे हिंसा की ओर झुके लोगों या पार्टियों की कारवाइयों को ख़ुली छूट देना बहुत कुछ इन शक्तियों की बहुतात (बहुमत) और भौतिक शक्तियों से प्रभावित होने से जुड़ा है। अगर विश्वास ईमान यानी सच को सच कहने की शक्ति पर कुछ भी भरोसा किया जाय तो कभी अत्याचारियों को इस डिक्टेटरी की हिम्मत न पड़ सके।

सेकुलर भारत में ये एलान मोटे अक्षरों में आँखों के सामने लाने की ज़रूरत है कि 'हर सम्प्रदाय और हर जाति के लिए यह बलिदान सन्मार्ग का दीपक है।' भारत की जनता सेकुलर होने के बाद भी इस 'हर सम्प्रदाय और हर जाति' के घेरे से बाहर नहीं निकल सकती,

इसलिए हुसैन की क़ुर्बानी की याद और स्मारक की इस अज़ाद भारत से वैसी ही माँग की जा सकती है जैसे उस देश से जो अपने को एक सम्प्रदाय और एक जाति से जुड़ा डिक्लेयर करता हो।

हमारे इस देश के राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने कहा है कि 'करबला की शहादत की घटना इन्सानी इतिहास की वह घटना है जो कभी भुलायी नहीं जा सकती और जो दुनिया के करोड़ों मर्दों और औरतों के जीवन पर असर डालती रहेगी। भारत में इस घटना की याद बड़ी गम्भीरता से मनायी जाती है जिसमें न केवल मुसलमान भाग लेते हैं बल्कि वो लोग भी जो मुसलमान नहीं है बराबरी की दिलचस्पी दिखाते हैं।

यह खुली हुई बात है कि किसी चीज़ से जुड़ी घटना की सच्चाई हालात बदलने से बदला नहीं करती, कभी भुलाया नहीं जा सकता, इसमें कभी का शब्द यदि माने समेत इस्तेमाल हो तो इसमें 'तब' और 'अब' का अन्तर नहीं हो सकता है। करोड़ों मर्दों और औरतों की गिनती से अगर किसी धर्म की जनगणना से जुड़े होने की धारणा पैदा भी हो सकती है तो बात के अन्त में अ-मुस्लिम लोगों की बराबर की रुचि ने एक धर्म की विशेषता बाक़ी नहीं रखी है। अतः देश में चाहे कोई भी शासन बने इस याद यादगार को किसी एक धर्म की परम्परा बता कर उसकी अनदेखी कर देने का औचित्य कभी नहीं हो सकता।

सबसे अन्त में हम श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन के शब्दों पर ध्यान दिलाना चाहते हैं। उनका व्यक्तित्व को इस समय राष्ट्रीय आधार से देश में कम महत्व नहीं मिला हुआ है, फिर कांग्रेस की अध्यक्षता के पद पर चुने जाने से यह खुली हुई बात है कि देश के नेतृत्व की ज़िम्मेवारी का भार अब आपके कन्धों पर है, इससे भी आपके बारे में खास ध्यान करने की ज़रूरत है कि आपके विचारों को आम तरह से पण्डित नेहरू के विरूद्ध समझा जाता है और हिन्दु संस्कृति के समर्थक होने के नाते आपको साम्प्रदायिक सुझाव वाला समझा जाता है, इसलिए करबला के अमर शहीद के बारे में आपके विचार देखे और समझे जाने का पात्र है।

आपने लखनऊ की हुसैन डे कमेटी को जो सन्देश भेजा था वह निम्नानुसार हैः

''हुसैन की शहादत मेरे लिए सदा एक दुखद आकर्षण रखती थी। उस काल में भी जब मैं कम आयु का बच्चा था मैं इस महान ऐतिहासिक घटना की याद मनाने के महत्व को समझता हूँ। इतनी ऊँची क़ुरबानियों ने जैसी इमाम हुसैन ने प्रस्तुत की हैं मानवता को उसके स्तर से ऊँचा कर दिया है और उनकी याद मनाने और स्मारक स्थापित करने के योग्य है।

महाशय के शब्दों में अगर गरिमा समझी जाए और अवश्य इनमें गरिमा है तो उनके इस आन्दोलन के होते हुए भी कि सारे देशवासियों को एक कल्चर वाला होना चाहिए, 'इमाम हुसैन की शहादत की यादगार उस संयुक्त कल्चर का हिस्सा होना चाहिए जिसमें आप सारे देश को रंगना चाहते हैं, इसलिए कि वह संयुक्त मानवता को ऊँचा करने वाली है और धर्म जाति के भेदभाव के बिना मनाने और स्थापना करने के योग्य है।

टण्डन जी का यह झुकाव कि हमारे देश की पुरानी परम्पराओं को वापस आना चाहिए, और भी बल के साथ इसका आहवान करता है कि हुसैनी यादगार को इस देश में स्थापित रहना चाहिए इसलिए कि इस देश की पुरानी परम्पराओं में अत्याचार हिंसा से घृणा और अत्याचार की मार खाए के साथ सहानुभूति बसी हुई है।

इन्हीं परम्पराओं का नतीजा यह था कि जिन्हें अरबी की धरती में पनाह न मिलती थी वह भी भारत आकर शरण लेने का मन बनाते थे। अतः देश की पहले की परम्पराओं के साथ इस परम्परा को परम्परानुसार बनी रहना चाहिए और इसीलिए करबला के शहीद की याद की माँग अज़ाद भारत से उसी समय नहीं है जब देखने में कांग्रेस का राज है बल्कि अगर खुल्लम-खुल्ला हिन्दु महासभा का राज हो जाय तब भी यह माँग बनी रहेगी और ख़ुद देश की पुरानी परम्पराएँ इसकी स्थापना चाहेंगी।

✪✪✪

मुख्य समाचार

इस्राईल का काम तमाम कर दिया जायगा: ईरानी राष्ट्रपति

इस्लामी जमहूरिया ईरान के राष्ट्रपति डॉ० अहमदी नेजाद ने सहयूनी हुकूमत के मुक़ाबले में हर तरह से तैयार रहने पर ज़ोर दिया है। राष्ट्रपति अहमदी नेजाद ने लेबनान की फ़ौजी तन्ज़ीम हिज़्बुल्लाह के कमाण्डर सै० हसन नस्रुल्लाह से टेलीफोन पर बातचीत में कहा कि सहयूनी हुकूमत के मुक़ाबले को इस तरह तैयार रहना चाहिए कि अगर सहयूनी हुकूमत ने दोबारा किसी तरह की हिमाक़त की तो उसका काम तमाम कर दिया जायगा और इलाक़े को हमेशा के लिए उसके शर से नजात दे दी जायगी। राष्ट्रपति अहमदी नेजाद ने सै० हसन नस्रुल्लाह से टेलीफोन पर होने वाली इस बातचीत के दौरान कहा कि ईरान हमेशा इलाक़े की क़ौमों को ख़ासकर लेबनान के अवाम के साथ रहेगा। उन्होंने सहयूनी हुकूमत के ख़िलाफ़ सै० हसन नस्रुल्लाह के मौजूदा अन्दाज़ को बहुत ही ठोस, दिलेराना और मुनासिब क़रार दिया। राष्ट्रपति अहमदी नेजाद ने कहा कि सहयूनी हुकूमत हिज़्बुल्लाह लेबनान और इलाक़े के अवाम से बुरी तरह डरी हुई है लेकिन इसी के साथ लेबनान और ग़ाज़ा में अपनी हार का बदला लेने पर तुली है क्योंकि वह एहसास करती है कि उसका वजूद ख़तरे में पड़ चुका है। उन्होंने कहा कि सहयूनी हुकूमत में हमला करने की हिम्मत नहीं है क्योंकि वह इसके नतीजों को अच्छी तरह जानती है। हिज़्बुल्लाह के कमाण्डर सै० हसन नस्रुल्लाह ने इस बातचीत के दौरान कहा कि लेबनान और हिज़्बुल्लाह के लिए हालात साज़गार हैं और हम सहयूनी हुकूमत की धमकियों से हरगिज़ धौंस नहीं खाने वाले हैं और यक़ीनन सहयूनी हुकूमत की तमाम साज़िशें नाकाम होंगी।

सै० हसन नस्रुल्लाह ने कहा कि स्ट्रेटिजी के हिसाब से सहयूनी हुकूमत इस पोज़ीशन में नही है कि नई जंग छेड़ सके लेकिन उसने अपनी धमकियों से नफसियाती जंग छेड़ रखी है और इस तरह रोब और वहशत फैलाना चाहती है लेकिन हर हाल में उसकी साज़िश नाकाम होगी।

इस्राईली पुलिस मस्जिदे अक़्सा में.....

मस्जिदे अक़्सा में ग़ैर मुस्लिमों के दाख़िले पर एहतेजाज करने वाले फिलिस्तीनियों की गिरफ़्तारी के लिए इस्राईली पुलिस मस्जिदे अक़्सा में दाख़िल हो गई। यूरोप से आये हुए यहूदी पर्यटकों के एक गिरोह के मस्जिदे अक़्सा आने के मौक़े पर फिलिस्तीनी मुसलमानों ने एहतेजाज किया और मस्जिद के लाउडस्पीकर से अपीलें की गईं कि हरम शरीफ़ और बैतुलमुक़द्दस की हिफ़ाज़त की जाए। मस्जिद में मौजूद मुसलमानों ने पर्यटकों पर पथराव किया, मुसलमानों को एहतेजाज से रोकने के लिए इस्राईली पुलिस हरम शरीफ़ के अहाते में दाख़िल हो गई और कई लोगों को गिरफ़्तार कर लिया। इस मौक़े पर शहर के गली कूचों में इस्राईली पुलिस को भारी संख्या में तैनात कर दिया गया। इस्राईली हुक्काम का कहना है कि पर्यटक यहूदी नहीं बल्कि फ्रांसीसी थे।

आह मिर्ज़ा इशरत हुसैन

अफ़सोस कि मिल्ली और समाजी कारकुन अलहाज मिर्ज़ा इशरत हुसैन साहब ने एक फ़रवरी 2010 को इस दारे फ़ाने से दारे बक़ा की तरफ रेहलत फ़रमाई। अलहाज मिर्ज़ा इशरत हुसैन साहब नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन के तरजुमान मासिक 'शुआ-ए-अमल' (हिन्दी-उर्दू) के मजलिसे मुशावरत में थे इसके अलावा आप अन्जुमन वज़ीफ़-ए-सादात के जनरल सेक्रेट्री भी रहे और ता हयात इसके बुनियादी मेम्बर रहे नीज़ गोरखपुर की शिया समाजी तन्ज़ीम 'शिया फेडरेशन' के अध्यक्ष भी थे। आपके मजलिसे सुव्वुम मौलाना तफ़सीर हसन साहब ने ख़िताब फ़रमाई। इसी सिलसिले में पाँच मार्च को दफ़्तर नूरे हिदायत हुसैनिया ग़ुफ़रानमाब लखनऊ में एक ताज़ियती जलसा मुनअक़िद हुआ जिसमें मुक़र्रिरीन ने अलहाज मिर्ज़ा इशरत हुसैन साहब की क़ौमी और मिल्ली ख़िदमात का एतेराफ़ किया और आख़िर में मरहूम की तरवीहे रूह के लिए फ़ातेहा ख़्वानी की गई। आपके चालीसवें की मजलिस सात मार्च बरोज़ इतवार को ख़ादिमकदा शैख़पुर गोरखपुर में होगी जिसे प्रोफ़ेसर सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर जायसी, इलाहाबाद ख़िताब फ़रमाएंगे।

इदारा मरहूम के पसमान्दगान ख़ुसूसन उनके बेटों, जनाब मिर्ज़ा मुहम्मद अब्बास, मिर्ज़ा अली अब्बास, मिर्ज़ा हसन अब्बास और मिर्ज़ा हुसैन अब्बास साहेबान को ताज़ियत पेश करता है और दुआ करता है कि ख़ुदावन्दे आलम बतुफ़ैले मुहम्मद[स०] व आले मुहम्मद[अ०] मरहूम को जेवारे मासूमीन में जगह इनायत फ़रमाए।

ईरान एटमी हथियार के ख़िलाफ़

आयतुल्लाहिलउज़्मा सै0 अली ख़ामेना-ई मद्दज़िल्लहू

ईरान के रहबरे आला आयतुल्लाह सै० अली ख़ामेना-ई ने निगराँ जौहरी इदारा आई.ए.ई.ए. की उस नई रिपोर्ट को खुले तौर पर नकार दिया है कि ईरान जौहरी हथियार बना रहा है। इदारे के नये ज़िम्मेदार यू.के. अमानु की क़यादत में तैयार की जाने वाली ये रिपोर्ट अब बहस के लिए इदारे के 35 रुकनी बोर्ड में पेश की जायगी। जौहरी इदारे का कहना है कि ईरान ने इदारे से तआवुन कम कर दिया है और रिपोर्ट में पेश किये गये तकनीकी शवाहिद बहुत क़ाबिले एतेबार हैं क्योंकि ऐसे ही सुबूत बराबर मिलते रहे हैं। याद रहे कि ये रिपोर्ट ऐसे मौक़े पर सामने आयी है जब ईरान में तैयार किये गये समुन्द्री जहाज़ शिकन, ज़मीन से फ़िज़ा तक मार करने वाले नये तरह की मीज़ाइल, तारपेडु और समुन्द्री तोपों को फ़ौज के लिए खोल दिया गया। ख़बरों के मुताबिक़ जमरान नामी 1500 टन तबाह करने वाले गाइड हेड मीज़ाइल ख़लीज में नसब किये जायेंगे। इस सिलसिले में होने वाली तक़रीब में शरीक ईरानी रहनुमा आयतुल्लाह ख़ामेना-ई की रिपोर्ट ठुकराते हुए ज़ोर देकर कहा कि ईरान के ख़िलाफ़ जौहरी हथियार बनाने जैसे इल्ज़ामात बिल्कुल बेबुनियाद हैं क्योंकि इस तरह के हथियार इस्तेमाल करना ईरान वालों के अक़ीदों से मेल नहीं खाते।

जमरान को ईरानी समुन्द्री फौज के हवाले कर दिया गया है। यह समुन्द्री जहाज़ एक तरक़्क़ीयाफ़्ता जहाज़ है जिसे ईरानी माहिरों ने तैयार किया है। रहबरे इन्क़ेलाबे इस्लामी ने इस समुन्द्री जंगी जहाज़ के मुख़्तलिफ़ हिस्सों का मुआयना किया। उनके साथ हथियारबन्द फ़ौज के बड़े अधिकारी भी थे। जमारान बनाने के बाद ईरानी डेस्ट्रायर समुन्द्री जंगी जहाज़ बनाने वाले मुल्कों में शामिल हो गया है। जमारान पर एक हेलीपैड है। इसके अलावा ये जहाज़ टोरपेडो से लैस है। इस पर बहरी जहाज़ों को तबाह करने वाले और सतह से हवा में मार करने वाले मीज़ाइल भी नसब हैं। ये जहाज़ इलेक्ट्रानिक वारफ़ियर की भी आला सलाहियत रखता है।

अमरीकी हुक्काम का कहना है कि अमरीका ईरान के जौहरी प्रोग्राम के बारे अपने ख़ुफ़िया इदारे की नई रिपोर्ट का इन्तिज़ार कर रहा है। वाज़ेह रहे कि अमरीका और कई मग़रिबी मुमालिक सलामती काउंसिल के तवस्सुत से ईरान के ख़िलाफ़ पहले से लगी हुई पाबन्दियाँ और सख़्त करवाना चाहते हैं। ईरान के ख़िलाफ़ पहले भी तीन बार करोबारी पाबन्दियाँ लगायी जा चुकी हैं।

ग़मे रफ़्तगाँ

अफ़सोस कि पिछले दिनों मिल्लत शहरी और आलमी सतह पर कई लोगों की रिहलत की वजह से अज़ीम नुक़सानों से दोचार हो गई जिनमें सबसे पहले आयतुल्लाह लुत्फ़ुल्लाह साफ़ी और फिर आयतुल्लाह मुन्तज़री जैसी अज़ीम शख़सियतों ने दाग़े मुफ़ारक़त दिया और उनके फ़ौरन बाद हिन्दुस्तान में ख़ानदाने इज्तेहाद से ताल्लुक़ रखने वाले बासलाहियत आलिमे दीन हुज्जतुल इस्लाम मौलाना सै० मुहम्मद जाफ़र साहब की रेहलत और फ़िर बानियाने तन्ज़ीमुल मकातिब में से मौलाना काज़िम रज़ा वाएज़ साहब और फिर मौलाना गुलाम मुर्तज़ा साहब की रेहलत से क़लमी और तदरीसी नुक़सानात हुए। इदारा मरहूमीन की तरहीमे रूह के लिए फ़ातेहाख़्वानी की दरख़्वास्त करता है और उनके पसमान्दगान को ताज़ियत पेश करता है। दुआ है कि खुदावन्दे आलम इन मरहूमीन को जेवारे मासूमीन में जगह इनायत फ़रमाये।

आह! मौलाना गुलाम मुर्तज़ा.....

अफ़सोस कि मसनदे दर्स और बज़्मे तालीम व तरहीम व ख़िताबत का एक बड़ा रौनक़ फ़ज़ा उठ गया और बज़्म को बेसहारा कर गया। तालीम के पीरेमुग़ाँ, तरबियत इल्मी के बेबहा मुजाहिदाना नमूना, मोहसिने इल्मो अदब, ख़ादिमे दीने मुस्तफ़ा मौलाना गुलाम मुर्तज़ा चल बसे।

एख़लास तदरीस का वह ख़ामोश व शगुफ्तारू तरहदार उठ गया जिसकी वसी व कुशादा मसनद के इतने फैज़याब हुए जितने इस ज़माने में शायद ही किसी को नसीब हुए हों। वह ज़ाकिरी के हवाले से भी बड़े माकूल व शफ़क़त नवाज़, सुतून और क़लम के हवाले से भी क़ाबिल व क़ाबिले क़द्र रुक्न भी थे।